B.A (Hons) Part II
Philosophy - Paper - III
Topic - निष्काम कर्म
Dr Sachidanand Prasad.
R.R.S. College, Mokama.

नीतिशास्त्र का संबंध मानव के कर्मों के साथ है। नीतिशास्त्र मे यह बतलाया जाता है कि मनुष्य को कौन-कौन सा कर्म करना चाहिए और कौन-कौन सा कर्म नही करना चाहिए। भगवद्गीता में कर्मयोग को काफी प्रधानता दी गई है और कहा गया है कि वह कर्म जो व्यक्ति को परमात्मा से जोड़े वही कर्मयोग है। गीता मे कर्म के महत्व को बतलाते हुए कहा गया है कि कोई भी मनुष्य एक क्षण के लिए भी अकर्मी नहीं हो सकता है क्योंकि मनुष्य कोई न कोई कर्म अवश्य करता है। फिर यह भी कहा गया है कि कर्म सृष्टि का नियम है। कर्म के बिना कोई स्वातन्त्र्य लाभ नहीं कर सकता। फिर समाज की रक्षा के लिए भी कर्म आवश्यक है। यदि कोई व्यक्ति कर्म न करे और सभी व्यक्ति इस आदर्श का पालन करने लगे तो न तो समाज शेष रहेगा और न व्यक्ति। फिर यह भी कहा गया है कि जिसने आत्मलाभ प्राप्त कर लिया है उसके लिए कर्म-अकर्म मे कोई भेद नहीं

रह जाता है, इसलिए उसके लिए भी कर्म आवश्यक है। गीता में कहा गया है कि कोई भी कर्म करने के पहले हमें याद रखना चाहिए कि मैं कर्मों का कर्ता नहीं हूँ। साधारणतः जब हमलोग कोई कर्म करते हैं तो अपने आप को उसका कर्त्ता मानते हैं, यही मेरा अहंकार है इसलिए कर्मयोगी को अहंकार रहित कर्म करना चाहिए। भगवद्गीता में [illegible] बतलाया गया है - अनासक्त कर्म और निष्काम कर्म। साधारणतः काम भावना मनुष्य को किसी कर्म के लिए प्रेरणा का काम करती है इसलिए विषयों के ध्यान से मनुष्य की उसमें आसक्ति हो जाती है। फिर आसक्ति से काम अर्थात् इच्छा उत्पन्न होती है। फिर काम से क्रोध और क्रोध से मोह अर्थात् बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, जिससे मनुष्य की निर्णय शक्ति कर्म-अकर्म का भेद नहीं कर सकती। अतः कहा गया है कि इसके लिए विषयों से आसक्ति हटानी पड़ती है। अतः गीता में निष्काम कर्म की चर्चा की गई है जिसमें कामनाओं का सर्वथा अभाव रहता है। यह तृष्णारहित कर्म है। मन को इन्द्रियों के विषय से हटाकर कर्म करना ही निष्काम कर्म कहलाता है। गीता

में इस संबंध में कहा गया है कि कर्म करना ही तुम्हारा अधिकार है न कि कर्म के फल पर। कभी कर्मफल को अपना हेतु मत बनाओ। कभी अकर्म में अपनी आसक्ति न रखो। गीता में कहा गया है कि निष्काम कर्म के दो पक्ष है - पहला यह कि इस भावना का त्याग करना कि मैं ही कर्म का कर्ता हूँ अर्थात ममता का त्याग। दूसरा यह कि कर्म के फल से आसक्ति को हटाना अर्थात तृष्णा का त्याग। इसप्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि गीता में कर्मवाद और अकर्मवाद का समन्वय हुआ है। ऐसे ही कर्म निष्काम कर्म है और इनसे बंधन कटता है। गीता की तरह जर्मन दार्शनिक Kant ने भी कहा है कि "कर्तव्य कर्तव्य के लिए" करना चाहिए। Kant के अनुसार कर्तव्य करते समय फल की आशा का भाव छोड़ देना चाहिए। उनके अनुसार इसलिए कर्म नहीं करना चाहिए कि उससे शुभ या अशुभ फल की प्राप्ति होगी।